(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

# EDUCATION OF MORAL VALUES AND CHARACTER-BUILDING IS THE BASIC FOUNDATION OF KNOWLEDGE: AN ANALYSIS

***Sachidanand Kumar, **Prof. (Dr.) Chetlal Prasad**

**Research Fellow (Pedagogy), **Professor (Pedagogy), Research Director*
*Sai Nath University, Jharkhand*

# नैतिक मूल्य एवं चरित्र-निर्माण की शिक्षा हैं ज्ञान का मूल आधार: एक विश्लेषण

***सचिदानंद कुमार, **प्रो0 (डॉ0) चेतलाल प्रसाद**

*शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), **प्रोफेसर(शिक्षाशास्त्र), शोध निर्देशक
साई नाथ विश्वविद्यालय, (माँ वि० शि० प्र० म0)

## ABSTRACT

*One of the main objectives of education is to train the sense organs of the child like eyes, ears etc. When the senses of the child are trained, only then its proper moral development will be possible. After the development of the child's mental powers, the reasoning power should be developed.*

*The purpose of value-based education in Indian knowledge-tradition is mainly the development of devotion to God and spirituality, realization of Satyam, Shivam, Sundaram, character-building, development of all dimensions of personality, development of social duties, tradition and culture of the nation. Protection, emphasis on becoming knowledgeable and making, following religion and truthfulness, establishing peaceful and pleasant coordination, coordination of knowledge and intelligence, establishing relationship between knowledge and action. In true sense, this education policy of the Indian knowledge-tradition is complete in itself, which enables a man to easily complete the journey from this world to the other world. The Radhakrishnan Commission (1948-49) laid special emphasis on secularism, spiritual knowledge and moral values. This commission suggested adopting 'meditation' exclusively in schools.*

*According to the 'Kothari Commission' (1964), special emphasis was given on the development of moral, spiritual and character qualities of the students. Moral education is the main means of the upliftment of human personality, cultured life and social welfare. With this, the defects of corruption, selfishness, carelessness, gluttony, deceit and intolerance etc. are removed.*

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

**सारांश**

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालक की ज्ञानेन्द्रियों जैसे-- आंख, कान आदि का प्रशिक्षण देना हैं| जब बालक की ज्ञानेन्द्रियाँ प्रशिक्षित होगी, तभी उसका समुचित नैतिक विकास संभव हो सकेगा| बालक की मानसिक शक्तियों के विकास के पश्चात तर्क-शक्ति का विकास किया जाना चाहिए|

भारतीय ज्ञान-परंपरा में मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्शद्ेय मुख्य रूप से ईश्वर भक्ति व आध्यात्मिकता का विकास, सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अनुभूति चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व के सभी आयामों का विकास, सामाजिक कर्तव्यों का विकास, राष्ट्र की परंपरा व संस्कृति का संरक्षण, ज्ञानवान बनने व बनाने पर बल, धर्मपालन व सत्याचरण का अनुसरण, शांतिपूर्ण व सुखद समन्वय स्थापित करना, विद्या और बुद्धि का समन्वय, ज्ञान व कर्मके मध्य संबंध स्थापित करना था| सही मायनों में भारतीय ज्ञान-परंपरा की यह शिक्षा नीति अपने आप में पूर्ण है, जो मनुष्य को इहलोक से परलोक तक की यात्रा को सुगमता से पूर्ण करने योग्य बनाती है| राधाकृष्णन आयोग (1948-49) ने धर्मनिरपेक्षता, आध्यात्मिक ज्ञान व नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया| इस आयोग ने 'ध्यान' को विशेष रूप से विद्यालयों को अपनाने का सुझाव दिया| 'कोठारी आयोग' (1964) के अनुसार भी छात्रों के नैतिक, आध्यात्मिक व चारित्रिक गुणों के विकास पर विशेष बल दिया गया|नैतिक शिक्षा मानव व्यक्तित्व के उत्कर्ष का, संस्करारित जीवन तथा समाज हित का प्रमुख साधन है. इससे भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, प्रमाद, लोलुपता, छल कपट तथा असहिष्णुता आदि दोषों का निवारण होता है.

## परिचय

नैतिकता/ नैतिक मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है. यह कर्तव्य की आंतरिक भावना है और उन आचरण के प्रतिमानों का समन्वित रूप है जिसके आधार पर सत्य असत्य, अच्छा-बुरा, उचित-अनुचित का निर्णय किया जा सकता है और यह विवेक के बल से संचालित होती है |एक आदर्श नागरिक के निर्माण के लिए जो शिक्षा दी जा रही है उसमें कौशल, रोजगार सृजन, अनुशासन और धर्म व नैतिकता को शामिल किया जाना ही चाहिए. सत्यम शिवम सुन्दरम् के आदर्शों को शिक्षा में सम्मिलित कर बालक को सही गलत की पहचान करने का सामर्थ्य दिलाना शिक्षा का एक उद्देश्य होना ही

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

चाहिए. गलत को गलत कहने और अन्याय के खिलाफ लड़ने का साहस पैदा करना शिक्षा का काम हैं.

सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, दयालुता, मैत्री आदि को नैतिक मूल्य कहा जाता है।सच्चाई को स्वतः साध्य मूल्य कहा जाता है यह अपने आप में ही मूल्यपूर्ण है।इसका प्रयोग साधन की भांति नहीं किया जाता, बल्कि यह स्वतः साध्य है। सभी विवादों में भी सत्य के अन्वेषण का प्रयास किया जाता है। सभी नैतिक मूल्यों का नैतिक आधार सत्य ही है। यद्यपि सत्य एक व्यापक दार्शनिक अवधारणा है लेकिन संक्षेप में इसे वस्तुस्थिति को ज्यों का त्यों कहना कहा जाता है। अर्थात् बिना किसी पूर्वाग्रह के किसी वस्तुस्थिति को देखना, समझना और व्यक्त करने को ही सच्चाई कहते हैं।

मनुष्य में दयालुता नामक सदगुण भी विद्यमान होता है। मनुष्य में अन्यों के प्रति दयालुता का भाव होता है। प्रायः वे अन्यों को कठिनाई में देखते हुए उनकी सहायता का प्रयास करते हैं क्योंकि मनुष्य यह स्वीकार करता है कि इस प्रकार की समस्याएं व घटनाएं किसी के साथ भी हो सकती है इसलिए मनुष्य दयालुता के बोध के कारण ही एक दूसरे की सहायता का प्रयास करते हैं।

प्रेम को सर्वोपरि मानव कहा गया है। मनुष्य प्रायः एक दूसरे से प्रेम करते हैं। प्रेम न केवल मानव जाति में विद्यमान होता है बल्कि मनुष्य में अन्य जीवों के प्रति भी प्रेमभाव विद्यमान होता है। क्रिश्चियन धर्म प्रेम पर अत्यधिक जोर देता है। उसका तर्क है कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं, इसलिए उनमें परस्पर प्रेम होना चाहिए। वास्तव में मानव प्रेम ही ईश्वर की सच्ची प्रार्थना है। क्रिश्चयसन धर्म, प्रेम और मानव सेवा पर सर्वाधिक जोर देता है।

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

## नैतिक शिक्षा शिक्षण के समाज सम्बन्धी उद्देश्य

समाज से सम्बन्धित नैतिक शिक्षा शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

प्राचीन भारत में “वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा पाई जाती है जिसका अभिप्राय है कि पूरी धरती ही एक परिवार है और यहाँ सभी को एक दूसरे के साथ परस्पर प्रेमपर्वक रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति की यह अवधारणा उसके सारतत्व 'सह अस्तित्व' पर आधारित है। इसे वर्तमान वैश्वीकरण से भी जोड़कर देखा जा सकता है जहाँ पूरा विश्व एक गाँव में परिणित हो गया है।

असंतोष, अलगाव, उपद्रव, आंदोलन, असमानता, असामंजस्य, अराजकता, आदर्श विहीनता, अन्याय, अत्याचार, अपमान, असफलता अवसाद, अस्थिरता, अनिश्चितता, संघर्ष, हिंसा... यही सब घेरे हुए है आज हमारे जीवन को.

व्यक्ति में एवं समाज में साम्प्रदायिकता, जातीयता, भाषावाद, क्षेत्रीयतावाद, हिंसा की संकीर्ण कुत्सित भावनाओं व समस्याओं के मूल में उत्तरदायी कारण है मनुष्य का नैतिक और चारित्रिक पतन अर्थात नैतिक मूल्यों का क्षय एवं अवमूल्यन.

नैतिकता का सम्बंध मानवीय अभिवृत्ति से है, इसलिए शिक्षा से इसका महत्त्वपूर्ण अभिन्न व अटूट सम्बंध है. कौशलों व दक्षताओं की अपेक्षा अभिवृत्ति-मूलक प्रवृत्तियों के विकास में पर्यावरणीय घटकों का विशेष योगदान होता है. यदि बच्चों के परिवेश में नैतिकता के तत्त्व पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं तो परिवेश में जिन तत्त्वों की प्रधानता होगी वे जीवन का अंश बन जायेंगे. इसीलिए कहा जाता है कि मूल्य पढ़ाये नहीं जाते, अधिग्रहीत किये जाते हैं.

देश की सबसे बड़ी शैक्षिक संस्था-राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के द्वारा उन मूल्यों की एक सूची तैयार की गयी है जो व्यक्ति में नैतिक मूल्यों के परिचायक हो सकते हैं. इस सूची में 84 मूल्यों को सम्मिलित किया गया है.

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

वास्तव में, नैतिक गुणों की कोई एक पूर्ण सूची तैयार नहीं की जा सकती, तथापि संक्षेप में हम इतना कह सकते हैं कि हम उन गुणों को नैतिक कह सकते हैं जो व्यक्ति के स्वयं के, सर्वांगीण विकास और कल्याण में योगदान देने के साथ-साथ किसी अन्य के विकास और कल्याण में किसी प्रकार की बाधा न पहुंचाए. विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि नैतिक मूल्यों की जननी नैतिकता सद्गुणों का समन्वय मात्र नहीं है, अपितु यह एक व्यापक गुण है जिसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रिया- कलापों पर होता है और सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित होता है. वास्तव में नैतिक मूल्य/नैतिकता आचरण की संहिता है. हमें इस बात को भली भांति समझना होगा कि नैतिक मूल्य नितांत वैयक्तिक होते हैं. अपने प्रस्फुटन उन्नयन व क्रियान्वय से यह क्रमशः अंतयक्तिक/सामाजिक व सार्वभौमिक होते जाते हैं.

एक ही समाज में विभिन्न कालों में नैतिक संहिता भी बदल जाती है. नैतिकता/नैतिक मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है. यह कर्तव्य की आंतरिक भावना है और उन आचरण के प्रतिमानों का समन्वित रूप है जिसके आधार पर सत्य असत्य, अच्छा-बुरा, उचित-अनुचित का निर्णय किया जा सकता है और यह विवेक के बल से संचालित होती है.

आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता, महत्त्व अनिवार्यता व अपरिहार्यता को इस बात से सरलता व संक्षिप्ता में समझा जा सकता है कि संसार के दार्शनिकों, समाजशात्रियों, मनोवैज्ञानिकों शिक्षा शात्रियों, नीति शात्रियों ने नैतिकता को मानव के लिए एक आवश्यक गुण माना है.

खेद का विषय है कि हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर ध्यान देती है. हमारी शिक्षा शिक्षार्थी में बोध जाग्रत नहीं करती वह जिज्ञासा नहीं जगाती जो स्वयं सत्य को खोजने के लिए प्रेरित करे और आत्मज्ञान की ओर ले जाये, सही शिक्षा वही हो सकती है जो शिक्षार्थी में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सके.

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

नैतिकता मनुष्य के सम्यक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है. इसके अभाव में मानव का सामूहिक जीवन कठिन हो जाता है. नैतिकता से उत्पन्न नैतिक मूल्य मानव की ही विशेषता है. नैतिक मूल्य ही व्यक्ति को मानव होने की श्रेणी प्रदान करते हैं. इनके आधार पर ही मनुष्य सामाजिक जानवर से ऊपर उठ कर नैतिक अथवा मानवीय प्राणी कहलाता है. अच्छा-बुरा, सही गलत के मापदण्ड पर ही व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना की परख की जाती है. ये मानदंड ही मूल्य कहलाते हैं. और भारतीय परम्परा में ये मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात 'धर्म' उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य मनुष्य कहलाता है अन्यथा उसमें और पशु में भला क्या अंतर? धर्म का अभिप्राय है मानवोचित आचरण संहिता. यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मापदंड ही नैतिक मूल्य हैं. नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा. नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आंतरिक व अंतः स्फूत तत्त्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में आधार का कार्य करते हैं,

नैतिक मूल्यों का विस्तार व्यक्ति से विश्व तक, जीवन के सभी क्षेत्रों में होता है. व्यक्ति-परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र से मानवता तक नैतिक मूल्यों की यात्रा होती है. नैतिक मूल्यों के महत्त्व को व्यक्ति समाज राष्ट्र व विश्व की दृष्टियों से देखा समझा जा सकता है. समाजिक जीवन में तेज़ी से हो रहे परिवर्तन के कारण उत्पन्न समस्याओं की चुनौतियों से निपटने के लिए और नवीन व प्राचीन के मध्य स्वस्थ अंतः क्रिया को सम्भव बनाने में नैतिक मूल्य सेतु-हेतु का कार्य करते हैं. नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियां व प्रक्रिया गति पाती हैं और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है.

नैतिकता समाज सामाजिक जीवन के सुगम बनाती है और समाज में अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण रखती है. समाज राष्ट्र में एकीकरण और अस्मिता की रक्षा नैतिकता के अभाव में नहीं हो सकती है. विश्व बंधुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्व शांति, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

नैतिक शिक्षा को धार्मिक शिक्षा से पृथक नहीं किया जा सकता है। नैतिक शिक्षा को चारित्रिक विकास के रूप में देखते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि नैतिक शिक्षा उपयुक्त आचरण तथा आदतों के विकास से संबंधित है। बालक का नैतिक विकास सामाजिक जीवन की स्वाभाविक देन है अतः नैतिक विकास सामाजिक विकास से अलग कोई वस्तु नहीं है।

शिक्षा मनुष्य के सम्यक् विकास के लिए उसके विभिन्न ज्ञान तंतुओ को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा लोगों में आत्मसात करने, ग्रहण करने, रचनात्मक कार्य करने, दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग देने की भावना का विकास होता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को परिपक्व बनाना है ।

नीति शास्त्र की उक्ति है-"ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः।" अर्थात् ज्ञान से हीन मनुष्य पशु के तुल्य है। ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा या विद्या से होती है। दोनों शब्द पर्यायवाची हैं। 'शिक्ष' धातु से शिक्षा शब्द बना है, जिसका अर्थ है-विद्या ग्रहण करना। विद्या शब्द 'विद' धातु से बना है, जिसका अर्थ है-ज्ञान पाना। ऋषियों की दृष्टि में विद्या वही है जो हमें अज्ञान के बंधन से मुक्त कर दे-'सा विद्या सा विमुक्तये'। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में 'अध्यात्म विद्यानाम्' कहकर इसी सिद्धांत का समर्थन किया है।

शिक्षा की प्रक्रिया युग सापेक्ष होती है। युग की गति और उसके नए-नए परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरूप भी बदल जाता है। यह मानव इतिहास की सच्चाई है। मानव के विकास के लिए खुलते नित-नये आयाम शिक्षा और शिक्षाविदों के लिए चुनौती का कार्य करते है जिसके अनुरूप ही शिक्षा की नयी परिवर्तित-परिवर्धित रूप-रेखा की आवश्यकता होती है। शिक्षा की एक बहुत बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अक्षुण्ण बनाए रखें, जिससे की राष्ट्र का गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष द्योतित हो सके और युवा पीढ़ी अपने अतीत से कटकर न रह जाए। [1]

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

वर्तमान समय में शिक्षक को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए केवल अक्षर एवं पुस्तक ज्ञान का माध्यम न बनाकर शिक्षित को केवल भौतिक उत्पादन-वितरण का साधन न बनाया जाए अपितु नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित कर आत्मसंयम, इंद्रियनिग्रह, प्रलोभनोपेक्षा, तथा नैतिक मूल्यों का केंद्र बनाकर भारतीय समाज, अंतरराष्ट्रीय जगत की सुख-शान्ति और समृध्दि को माध्यम तथा साधन बनाया जाय। ऐसी शिक्षा निश्चित ही 'स्वर्ग लोके च कामधुग् भवति।' कामधेनु बनकर सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सुख-समृध्दि तथा शा़िन्त का संचार करने वाली होगी।[2]

वर्तमान शिक्षा में नैतिक मूल्यों का महती आवश्यकता है। वैदिक शिक्षा प्रणाली का मानना है कि समस्त ज्ञान मनुष्य के अंतर में स्थित है। भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार आत्मा ज्ञान रूप है ज्ञान आत्मा का प्रकाश है। मनुष्य को बाहर से ज्ञान प्राप्त नहीं होता प्रत्युत आत्मा के अनावरण से ही ज्ञान का प्रकटीकरण होता है। श्री अरविन्द के शब्दों में "मस्तिष्क को ऐसा कुछ नहीं सिखाया जा सकता जो जीव की आत्मा में सुप्त ज्ञान के रूप में पहले से ही गुप्त न हो।' स्वामी विवेकानंद ने भी इसी बात को इन शब्दों में व्यक्त किया है-"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सिद्ध है कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता सब अंदर ही है हम जो कहते है कि मनुष्य 'जानता' है। यथार्थ में मानव शास्त्र संगत भाषा में हमें कहना चाहिए की वह अविष्कार करता है, अनावृत ज्ञान को प्रकट करता है ।

अतः समस्त ज्ञान चाहे वह भौतिक हो, नैतिक हो अथवा आध्यात्मिक मनुष्य की आत्मा में है। बहुधा वह प्रकाशित न होकर ढका रहता है और जब आवरण धीरे-धीरे हट जाता है तब हम कहते है कि हम सीख रहे है जैसे-जैसे इस अनावरण की क्रिया बढ़ती जाती है हमारे ज्ञान में वृद्धि होती जाती है। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य नए सिरे से कुछ निर्माण करना नहीं अपितु मनुष्य में पहले से ही सुप्त शक्तियों का अनावरण और उसका विकास करना है।[3]

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

चारित्रिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल देते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा था - 'शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता का विकास है वह शिक्षा जो जनसमुदाय को जीवन संग्राम के उपयुक्त नहीं बना सकती, जो उनकी चारित्रिक शक्ति का विकास नहीं कर सकती, जो उनके मन में परहित भावना और सिंह के समान साहस पैदा नहीं कर सकती , क्या उसे भी हम शिक्षा नाम दे सकते है?' शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था -'सभी शिक्षाओं का, अभ्यासों का अंतिम ध्येय मनुष्य का विकास करना है। जिस अभ्यास के द्वारा मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और आविष्कार संयमित होकर फलदायी बन सकें।'

शिक्षार्थी के जीवन में नैतिक मूल्य परक उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि नैतिक मूल्यों वाली उच्च शिक्षा लोगों को एक अवसर प्रदान करती है जिससे वे मानवता के सामने आज शोचनीय रूप से उपस्थित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक मसलों पर सोच-विचार कर सकें। अपने विशिष्ट ज्ञान और कौशल के प्रसार द्वारा उच्च शिक्षा राष्ट्रीय विकास में योगदान करती है। इस कारण हमारे अस्तित्व के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।
उच्च शिक्षा के संदर्भ में गुणवत्ता की महत्ता का विश्लेषण करते हुए तत्कालीन उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव बसंत प्रताप सिंह ने कहा है- "उच्च शिक्षा का संबंध जीवन में गुणात्मक मूल्यों के विस्तार से है जिससे सभ्यता के विकास क्रम में अर्जित मानवता के दीर्घकालिक अनुभवों को आत्मलब्धि की दिशा में समाजीकरण के साथ अग्रसारित किया जा सके। ऐसे अनुभवों के समुच्चय ही कालान्तर में मूल्य बनते हैं जिन्हें अपनाने की परम्परा ही संक्षेप में संस्कृति कहलाती है। और इस संस्कृति के निर्माण में एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज के बदलते सामाजिक परिवेश में शिक्षा, शिक्षा के प्रकार और शिक्षा प्राप्त करने के तरीकों में कई परिवर्तन आए है, जिसमें शिक्षक की भूमिका में भी बदलाव आया है, एक अच्छे शिक्षक के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए महाकवि कालिदास ने कहा है कि श्रेष्ठ शिक्षक वही है जिसकी अपने विषय में गहरी पैठ हो। उसका अपने विषय पर तो अधिकार होना ही चाहिए, अध्यापन क्षमता भी उत्कृष्ट कोटि की होनी चाहिए, जिससे छात्रों को श्रेष्ठ ज्ञान लाभ मिल सके।

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

## संदर्भ -

1. कल्याण 'शिक्षांक' सम्पादक- राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस, गोरखपुर, वर्ष 1988, राष्ट्रीय शिक्षा-नीति एक विहंगावलोकन- श्री मुरारीलाल शर्मा, पृष्ठ- 361

2. वही, प्राचीन-अर्वाचीन भारतीय शिक्षा-पध्दति का तुलनात्मक अध्ययन- श्री नन्दनन्दनानन्द सरस्वती, पृष्ठ-80

3. वही, शिक्षा के भारतीय मनोवैज्ञानिक आधार - श्री लज्जाराम जी तोमर - पृष्ठ 236

***4 बैरेट। टेरी, (1997), मॉडर्निज्म एंड पोस्टमॉडर्निज्म; कला उदाहरणों के साथ एक सिंहावलोकन। कला शिक्षाः एक उत्तर आधुनिक युग में संदर्भ और अभ्यास, एनएईए, वाशिंगटन डी.सी.***

***5 बिएस्टा, गर्ट.जे.जे, (1998)। "मानवतावाद के बिना शिक्षाशास्त्रः फौकॉल्ट और शिक्षा का विषय", इंटरचेंज, 29(1), 1–16।***

***6 ब्लोलैंड, एच। (1995)। पोस्टमॉडर्निज्म एंड हायर एजुकेशन, जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, वॉल्यूम। 66 (5)।***

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

8. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्रबंधन पुस्तक से, बसंत प्रताप सिंह (प्रमुख सचिव) उच्च शिक्षा विभाग, पृष्ठ-5

9. श्लिष्टाक्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता ।

## REFERENCE -

1. Kalyan 'Shikshank' Editor - Radheshyam Khemka, Geetapress, Gorakhpur, Year 1988, An overview of National Education Policy - Mr. Murarilal Sharma, page- 361
2. The same, comparative study of ancient-modern Indian education system - Shri Nandanandnanand Saraswati, page-80

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

3. Same, Indian Psychological Basis of Education – Mr. Lajjaram Ji Tomar – Page 236
4. Bairet, Terri (1997), Modernism and Postmodernism; An overview with art examples. Art Education: Context and Practice in a Postmodern Age, NAEA, Washington D.C.
5. Biesta, Girt J.J (1998), "Pedagogy without humanism: Foucault and the subject of education", Interchange, 29(1), 1-16.
6. Bloland, H., (1995), Postmodernism and Higher Education, Journal of Higher Education, Vol 66(5)
7. National Education Policy 1986
8. From the book Quality Management in Higher Education, Basant Pratap Singh (Principal Secretary) Department of Higher Education, page-5
9. Shlishtakriya Kasyachidatma Sanstha Sankrantiranyasya Visheshyukta.